प्रशन 4. गोविन्द दास रचित " विधापति बन्दना " शीर्शक कवितक भावार्थ लिखू ।

उतर - *महापति विधापतिक रचनाक प्रभाव गोविन्दास पर पूर्णरोपेण परल छलनि । एहि सहित्यकें कवि स्विकार करैत वंदना कैल अछि ।*

कविपति विधापति मतिमाने।

याक गीत जग चित चोराओल

गोबिंन्द गौरी- सरसरस गाने

गोबिंद दास महाकवि विधापति के अपन काव्य गुरू मानेत छलाह विधापति स्द्रस्य हिनक पद भक्ति भावक अछि ।

इ अपन काव्य रचनामे राधाक्रिशक प्रेम लोलाके प्रमुखता देलहिन

जे सुख सम्पदे शंकर धनिया।

से शुख - सार सरस रसिकाई

कंथ्हि कण्टः परायल बनिआ

Scanned by CamScanner

हम ओहि कविक बंदना करैत छि ,जिनकर रचित पदक गान सुनि महादेव अपनाकें धन्य मानेत छलाह ।जिनक महेशवाणी नचारी लोकक कण्ठहार बनल।

भक्त शिरोमनि नारद हिनक भक्ति रचनाक श्रवणसँ रसप्लावति भ भाव विहल भ जाइत छलाह्।

आनन्दे नारद न धरए ।

से आनंद रस- जग भरि बरिशल

सुखम्य विधापति- रस - मेहा॥

कविपति विधापति रचनाक रसधारमे नारदे मुनि नहि बहला संसारक रस काव्यरसमे रहल छथि। एहन ह्रिद्य अहलादकारि पदक रचनाकार विधापति छलाह ।परंच गोविंदास के एहि बातक विस्मय विधापतिक पदकें मतिमंद लोअल छथिक ओहि सुख सम्पदा के त्यागि आन - सुख दिस मनकें भरमा रहल छथि महाकवि गोविंद दास के हिनक रचना कें देख - सुनि मति मंद

Scanned by CamScanner

भ जाइत छन्हि। ओहिना जेना भुट्ट लोक चांद कें नहि पबैत अछि।

Scanned by CamScanner